माननीय अध्यक्ष महोदय का प्रारंभिक संबोधन

* माननीय सदस्यगण, सत्रहवीं विधान सभा के दूसरे सत्र में मैं आप सबका स्वागत करता हूं । प्रथम सत्र तो विभिन्न प्रकार की औपचारिकताओं का सत्र होता है । वास्तव में दूसरे सत्र से ही माननीय सदस्यगण संसदीय कार्य प्रारम्भ करते हैं ।

* यहां बहुत सारे माननीय सदस्यगण ऐसे हैं जिनका मार्गदर्शन मेरे लिये मील का पत्थर साबित होगा । मैं सदैव उन वरीय माननीय सदस्यों से सीखने का प्रयत्न करूंगा । 105 जो नये माननीय सदस्य सभी दलों के चुनकर आये हैं, आज मैं उनको विशेष रूप से शुभकामना देता हूं । सभी नये माननीय सदस्यों को बिहार विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली दी गई है । मुझे आशा है कि उसे उन्होंने पढ़ा होगा और पढ़कर समझा होगा ।

* सदन के सुव्यवस्थित संचालन की जिम्मेवारी आप सबने मुझे दी है । जिसका निर्वहन मैं नियमावली और परम्पराओं के अनुरूप करूंगा । मैं नये माननीय सदस्यों से विशेष अनुरोध करूंगा कि वे कार्य संचालन नियमावली के परिशिष्ट में वर्णित आचार-संहिता का अवलोकन कर उसे आत्मसात कर अपने आचरण में प्रदर्शित करें ताकि यह सदन देश के सभी सदनों को एक नई राह दिखा सके । सदन सार्थक विमर्श के लिए है और विमर्श तभी संभव है जब हम सभी अपने लिए एक आचार संहिता, मर्यादा की एक लक्ष्मण रेखा बना लें। यहां बोलते भले ही माननीय सदस्य हों लेकिन यह आवाज हमारी नहीं बल्कि हमारे माध्यम से जनता अपनी आवाज इस सदन को और सदन के माध्यम से सरकार को सुनाती है । इसलिए हम सबको सार्थक विमर्श करना चाहिए और

यही एक माध्यम है जिससे जनता की आकांक्षाओं को हम सब मिलकर पूरा कर पायेंगे ।

* हम लोगों के समक्ष बड़ी चुनौती है कि कैसे इस राज्य को विकास के पथ पर देश के अन्य राज्यों से आगे ले जाएं । इस राज्य के हरेक परिवार को कैसे हम प्रोत्साहित करें, कैसे जोड़ें कि हर परिवार अपने को राज्य के शासन-संचालन में भागीदार समझे ।

* माननीय सदस्यगण, आज माघ मास, शुक्ल पक्ष, अचला सप्तमी का शुभ दिन है । मान्यता है कि आज के किये हुए कार्य द्वारा अर्जित पुण्य एवं पाप दोनों अचल रहते हैं। आप सभी को अचला सप्तमी की शुभकामना देता हूं।

* बिहार की जागरूक जनता ने हम सबों पर भरोसा करते हुए राज्य के लोकतंत्र के इस पवित्र मंदिर के पुजारी के रूप में सेवा के लिए भेजा है । इस लोकतंत्र के मंदिर में राज्य की करोड़ों जनता की समस्या रूपी तकलीफों को दूर कर उनको विकास रूपी सुख उपलब्ध कराने का संकल्प लेते हुए इस सत्र को सुचारू एवं व्यवस्थित रूप से चलाना है जिससे सदन में सार्थक विमर्श हो सके ।

* सत्र में विधायी एवं वित्तीय कार्यों का निष्पादन संवैधानिक प्रावधानों के तहत करना है इसके लिए सदन का माहौल शांतिपूर्ण एवं सुखद बनाना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है ।

* इस सदन रूपी फुलवारी में हम सब अलग-अलग रंगों और खुशबू के फूलों की तरह हैं जिसकी महक से नकारात्मक शक्तियां आशा और उम्मीद तथा विश्वास के रथ पर सवार होकर सकारात्मकता के रूप में परिवर्तित होकर जन जीवन को सरल एवं सुलभ बनायेंगी ।

* हमें सदन में ईमानदारी से एक माली की तरह अपनी भूमिका निभाते हुए अपनी कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचय देना होगा ताकि सदनरूपी इस फुलवारी से पूरा बिहार सुगंधित हो सके । सदन में हम सबों के आचरण एवं व्यवहार से समाज में एक सकारात्मक संदेश जाय । हम आने वाली पीढ़ी और युवा पीढ़ी को एक बेहतर बिहार उपलब्ध करायें । लोकतंत्र के इस पावन मंदिर से ऐसा नाद पूरे बिहार में गूंजे जिससे बिहार का माहौल पूरी तरह से उत्साहजनक बने, लोग आनंदित हों और उन्हें इस बात पर फख्र महसूस हो कि उनके जनप्रतिनिधि उनकी अपेक्षा के अनुरूप अपने संसदीय दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं । इसी सोच के साथ हम सबों को कदम बढ़ाना है ।

* यह सत्र बिहार को अगले एक साल तक के लिए विकास के पथ पर ले जानेवाला सत्र साबित हो, सबके विश्वास पर खड़ा उतरने वाला सत्र साबित हो, बिहार की करोड़ों जनता की भलाई के लिये याद किये जाने वाला सत्र हो यह हमारी कामना है ।

* आइये, हम सब लोग परस्पर मिल-जुलकर बिहार को आत्मनिर्भर बनाने और विकास के पथ पर ले जाने का संकल्प लें ।